VOL- VI ISSUE-XII DECEMBER 2019 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 5.707 ISSN 2349-638x

डा. भीमराव अम्बेडकर : अछूतोद्धारक

डा. श्वेता जैन
अंशकालिक प्रवक्ता
जे. ए .वी. गर्ल्स पी.जी. डिग्री कालिज,
बडौत जनपद बागपत

सारांश

दलितों को जागृत करने, स्वावलम्बी बनाने, शिक्षित करने, संगठित करने, अपनी जडता को मिटाने में अगर किसी ने सक्षम बनाया तो वह है डा. भीमराव अम्बेडकर।

डा. अम्बेडकर का जीवन भारत के शोषित, पीडित एवं दलित समाज के लिए ही नही बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के शोषितों के लिए प्रेरणा का श्रोत रहा। सैकडों सालों से जाति की जंजीर में बंधे करोडो दलित डा. अम्बेडकर को मसीहा कहते थे। जाति की सीढी के सबसे निचले पायदान पर खडे लोगों की नजर में बाबा साहिब किसी देवता से कम नही थे। छुआछूत के आडम्बरों से त्रस्त दलितों के लिए वे सबसे बडे मुक्तिदाता थे।

मूल शब्द : दलित शब्द का अभिप्राय, मूक नायक मराठी पाक्षिक पत्र, दलित वर्ग– सामाजिक स्वतंत्रता एवं समानता, कोरेगाव युद्ध स्मारक

भारतीय समाज वर्ण और जाति के सिद्धान्तों पर आधारित है इसका उल्लेख मनुस्मृति[1], भीष्म के शांतिपर्व एवं कौटिल्य के अर्थशास्त्र के साथ–साथ पाणिनी के अष्टाधायी में भी मिलता है। वर्णव्यवस्था के अनुसार ब्राहमणों का कार्य पठन पाठन यज्ञ और हवन और देवपूजा आदि था तो क्षत्रियों का कार्य देश की रक्षा एवं दान देना था वैश्यों का कार्य कृषि, व्यापार, उत्पादन करना एवं दान देना था शुद्रों का कार्य सेवा करना था। यही परम्परा पीढी दर पीढी चलती रही और इस परम्परा का पालन करते–करते समाज में सेवक तथा मालिक का भाव उत्पन्न हो गया। ''दलित शब्द आक्रोश, चीख, वेदना पीडा, चुभन, घुटन और छटपटाहट का प्रतीक है।[2]

दलित वर्ग समाज का निम्नतम वर्ग होता है और विभिन्न आर्थिक अवस्थाओं में विभिन्न नामों से यह जाना जाता रहा। दासप्रथा में दास, सामन्ती व्यवस्था में कृषक, पूंजीवादो समाज में सर्वहारा वर्ग, दलित वर्ग के नाम से जाना गया। दलित शब्द में कौन सी जातिया आती है इस प्रश्न का समाधान डा. शरण कुमार लिम्बाले ने किया ''दलित'' केवल हरिजन और नव बोध नही गांव की सीमा के बाहर रहने वाली सभी अछूत जातियाँ, आदिवासी, भूमिहीन, खेत मजदूर, श्रमिक कष्टकारी जनता और यायावार जातियाँ सभी की सभी दलित शब्द से व्याख्यायित होती है।''[3]

सर्वप्रथम डा.अम्बेडकर ने ही दलितों को उनके अधिकार दिलाने उनका कल्याण करने के लिए आन्दोलन किया। उनका जन्म इसी वर्ग में हुआ था। उन्होंने पग–पग पर अछूत होने के कारण अपमान का कडवा जहर पीया था। समाज में व्याप्त भेदभाव विषमता और अपमान की आग में तपकर डा. भीमराव अम्बेंडकर एक ऐसा कुन्दन बन गए जिसने यह साबित किया कि कर्मठता, आत्मबल और स्वाभिमान के द्वारा समाज की इन रूढियों का सामना किया जा सकता है, अपना जीवन श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। बाबा साहिब ने दलित वर्ग को ललकारते हुए कहा कि अपनी कमजोरियें से हमे स्वयं लडना है ''सज्जनों, हम कहते है हमारी स्थिति खराब है और दूसरे लोग हमारे साथ बुरा बर्ताव करते है, हमारे साथ अन्याय हो रहा है ये सभी बातें सच है लेकिन हम इस अन्याय से खुद को कैसे निकाले? हम कब चतुर और बुद्धिमान होंगे? हमारे बुद्धिमान या सक्षम न होने के पीछे बाहरी ताकतों या जातियों अथवा हिन्दुओं वगैरह का हाथ नही है। यदि ऐसा है भी तो ऐसा नही है कि हम अपनी ताकत से इन कारणों से पार नही पा सकते। कोई भी उतना खराब खाना नही खा सकता जिसे खाने के लिए हम मजबूर है। लेकिन क्या हमारे लोगों ने कभी शिकायत की।''[4]

डा. अम्बेडकर ने दलित वर्ग की हर छोटी से छोटी समस्या का गहराई से अध्ययन किया उनका एकमात्र उद्देश्य था कि दलितों का उद्वार स्वयं दलितों द्वारा होना चाहिए ओर वे स्वयं निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र होने चाहिए। उनका मानना था कि छुआछूत, जाति पाँति, अमानवीय भेदभाव पूर्ण व्यवहार के पीछे के मूल कारणों का पता लगाये बिना आन्दोलन सफल नही हो सकता। अछूतोद्वार के उनके इस आन्दोलन में सर्वाधिक सहयोग प्रदान किया कोल्हापर के छत्रपति साहू महाराज ने, उन्होने अपनी रियासत में अछूतवर्ग के कल्याण के लिए कई योजनाएं चला रखी थी जैसे शिक्षा योजना जिसमें

अछूतों को शिक्षित करने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही थी।

अछूत छात्रों को आवास, भोजन, वस्त्र उपलब्ध कराए जा रहे थे। डा. अम्बेडकर ने साहू महाराज को एक अखबार निकालने की अपनी योजना बताई। उनके सहयोग से ही 31 जनवरी 1920 को 'मूकनायक' नामक मराठी पाक्षिक पत्र प्रारम्भ किया गया! इसके संपादक महार जाति के 'श्री पांडू रंग भटकर' थे। इस पत्रिका के माध्यम से अम्बेडकर ने हिन्दू समाज की बुराईयों पर कडे प्रहार किए। उन्होंने एक लेख में स्पष्ट किया ''कि हिन्दु समाज एक ऐसी मीनार के समान है, जिसमें अनेक मंजिले है पर उनमें प्रवेश के लिए कोई द्वार नही है। व्यक्ति उसी मंजिल में दम तोडेगा जिसमें वह पैदा हुआ है।''[5] डा. अम्बेडकर दलित वर्ग की सामाजिक स्वतंत्रता एवं समानता की जोरदार वकालत कर रहे थे उनका मानना था कि अपने ही समाज के लोगों के साथ नीचता का व्यवहार करने के कारण ही हिन्दु समाज पतन के गर्त में जा धंसा था। मई 1920 में नागपुर में गठित दलित समाज की नवनिर्मित अखिल भारतीय बहिष्कृत परिषद की सभा में उन्होने अपना यह मंतव्य इन शब्दों के द्वारा प्रकट भी कर दिया '' दलित समाज की प्रगति में बाधक कोई भी संस्था या व्यक्ति चाहे वह दलित समाज का हो, चाहे स्वर्ण हिन्दु हो उस पर तीव्र निषेध किया जाना चाहिए''[6]

डा.अम्बेडकर स्वयं को अपनी अंधी जनता के हाथ की छडो कहते थे उनका कहना था कि यदि लोग इस छडी के सहारे चलना जारी रखेंगे तो धूर्त लोगों द्वारा बिछाए गये जाल में कभी नही फसेंगे। उनके समय में गैर ब्राहमण एवं अछूत ब्राहमणों की भ्रष्ट बौद्धिकता एवं घमंडी मानसिकता के समक्ष आत्म सर्मपण करते आये थे। दलित ब्राहमणों से डरते थे लेकिन बाबा साहेब के चेताने पर ये दोनों सम्प्रदाय अपनी गलती समझ चुके थे बाबा साहब कहते थे कि यदि ये दोनों समुदाय एक हो जाए एवं अपनी प्रगति के लिए स्वयं प्रयास करे तो सवर्ण लोगों की गुलामी से मुक्ति पा जायेंगे ।

कोलाबा जिले के महाड पुरसभा के अहाते के तालाब से जल लेना हो या गणेशोत्सव समिति में निम्न जाति को प्रवेश दिलाना हो, बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना हो या गांधी जी का सामना करना हो डा. अम्बेडकर एक मजबूत स्तम्भ की तरह दलित वर्ग के लिए खडे रहे। कोरे गांव युद्ध स्मारक की बैठक में उनका संबोधन हृदय विदारक व ऐतिहासिक रहा। उन्होंने श्रोताओं से कहा ''उनके समुदाय के सैकडों लडाकुओं ने अंग्रेजों की तरफ से लडाई लडी थी, लेकिन खेदपूर्ण है कि उन्ही ने बाद में उन्हे 'गैर सैन्य समुदाय' घोषित किया। चूंकि हिन्दू जाति ने उनसे अछूतो और घृणितों जैसा व्यवहार किया और उनके पास जीविका का कोई साधन नही था। इसीलिए आखिरी विकल्प के तौर पर वे ब्रिटिश फौज में शामिल हुए थे। डा.भीमराव अम्बेडकर ने दलितों का आहवान किया कि वे अंग्रेजी सरकार की इस नीति के खिलाफ आंदोलन करें ताकि अंगज सरकार ने दलितों पर सैन्य सेवा में प्रवेश पर जो प्रतिबंध लगाए है वो वापिस लिए जाए।

मंदिरों में प्रवेश करना ही दलितों के लिए उस समय एकमात्र समस्या नही था। उच्च शिक्षा एवं रोजगार का अभाव, अस्पृश्यता का व्यवहार, दलित समाज की भीरूता भी उनके पिछडेपन का कारण थी।

1 मार्च 1933 को बम्बई की एक सभा में दलित वर्ग के भाइयों का आहवान करते हुए उन्होने कहा कि ''तुम्हे अपनी दासता स्वयं मिटानी है उसके अंत के लिए ईश्वर या अतिमानव पर निर्भर मत रहना। आपकी मुक्ति राजनीतिक शक्तियों में निहित है न कि तीर्थ स्थानों या उपवासों में। शास्त्रों में विश्वास के कारण तुम्हे दासता, अभाव एवं गरीबी से छुटकारा नही मिलेगा।''[8]

उन्होने मनुस्मृति दहन (1927), महाड सत्याग्रह (1928) नासिक सत्याग्रह (1930), येवला की गर्जना (1935) जैसे आंदोलन चलाएं और उनके विचारों को मूकनायक, बहिष्कृत भारत, समाज, जनता और प्रबृद्ध भारत नामक पत्र–पत्रिकाओं ने ध्वनि प्रदान की। अपने जीवन के 65 वर्ष उन्होने दलितों के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक विकास को समर्पित कर दिए।

सन्दर्भ सूची

1. मनुस्मृति के अध्याय–1 से 31 श्लोक में कहा गया कि संसार के कल्याण के लिए ब्रहमा ने अपने मुँह, हाथ, जांघो और पैरों से कमशः ब्राहमण क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र को जन्म दिया।
2. हिन्दी काव्य में दलित काव्यधरा– माता प्रसाद पृष्ठ–1
3. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र– पृ.–38 डा. शरण कुमार लिम्बाले
4. मराठी भाषण, मुम्बई पांतीय बहिष्कृत वर्ग का सम्मेलन (तीसरी मीटिंग, निपानी, जिला बेलगांव (11 अप्रैल 1925) मराठी ब्यौरा बी.ए. डब्ल्यू.एस. भाग–18 (1) पृ.–25–31
5. डा. अम्बेडकरः जीवन और आदर्श– पृष्ठ 46 रामलाल विवेक
6. तत्रैव पृष्ठ–47
7. मराठा भाषण, कोरेगांव युद्ध स्मारक मे बैठक, पुणे के पास कारे गांव (1 जनवरी 1927), अंग्रेजी रिपोर्टः कीर, बी,ए, डब्ल्यू. एस. भाग–17 (3) पृ.–3–7
8. डा. अम्बेडकर : जीवन और आदर्श पृ.–113 राम लाल विवेक